॥ श्रीहरिः ॥ 1991

श्रीदुर्गाचालीसा
एवं
श्रीविन्ध्येश्वरीचालीसा

(विशिष्ट संस्करण)

श्रीदुर्गाचालीसा

नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो अंबे दुख हरनी॥

निरंकार है ज्योति तुम्हारी।
तिहूँ लोक फैली उजियारी॥

ससि ललाट मुख महा बिसाला।
नेत्र लाल भृकुटी बिकराला॥

रूप मातु को अधिक सुहावे।
दरस करत जन अति सुख पावे॥

तुम संसार सक्ति लय कीन्हा।
पालन हेतु अन्न धन दीन्हा॥

अन्नपूर्णा हुई जग पाला।
तुम ही आदि सुंदरी बाला॥

प्रलयकाल सब नासन हारी।
तुम गौरी सिव संकर प्यारी॥

सिवजोगी तुम्हरे गुन गावें।
ब्रह्मा बिष्णु तुम्हें नित ध्यावें॥

रूप सरस्वति को तुम धारा।
दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन्ह उबारा॥

धरा रूप नरसिंह को अंबा।
परगट भई फाड़ कर खंबा॥

रच्छा करि प्रहलाद बचायो।
हिरनाकुस को स्वर्ग पठायो॥

लछमी रूप धरो जग माहीं।
श्री नारायन अंग समाहीं॥

छीर सिंधु में करत बिलासा।
दया सिंधु दीजै मन आसा॥

हिंगलाज में तुम्हीं भवानी।
महिमा अमित न जाय बखानी॥

मातंगी धूमावति माता।
भुवनेस्वरि बगला सुख दाता॥

श्री भैरव तारा जग तारिनि।
छिन्नभाल भव दुःख निवारिनि॥

केहरि बाहन सोह भवानी।
लांगुर बीर चलत अगवानी॥

कर में खप्पर खड़ग बिराजै।
जाको देख काल डर भाजै॥

सोहै अस्त्र और तिरसूला।
जाते उठत सत्रु हिय सूला॥

नगरकोट में तुम्ही बिराजत।
तिहूँ लोक में डंका बाजत॥

सुंभ निसुंभ दानव तुम मारे।
रक्त बीज संखन संहारे॥

महिषासुर नृप अति अभिमानी।
जेहि अघ भार मही अकुलानी॥

रूप कराल कालीको धारा।
सेन सहित तुम तिहि संहारा॥

परी गाढ़ संतन पर जब जब।
भई सहाय मातु तुम तब तब ॥

अमर पुरी औरों सब लोका।
तव महिमा सब रहै असोका ॥

ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
तुम्हें सदा पूजें नरनारी ॥

प्रेम भक्ति से जो जस गावै।
दुख दारिद्र निकट नहि आवै ॥

ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई।
जन्म मरन ताको छुटि जाई ॥

जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
ज़ोग न हो बिन सक्ति तुम्हारी ॥

संकर आचारज तप कीन्हो।
काम क्रोध जीति सब लीन्हो॥

निसिदिन ध्यान धरो संकर को।
काहु काल नहि सुमिरो तुमको॥

सक्ति रूप को मरम न पायो।
सक्ति गई तब मन पछितायो॥

सरनागत है कीर्ति बखानी।
जय जय जय जगदंब भवानी॥

भई प्रसन्न आदि जगदंबा।
दई सक्ति नहि कीन्ह बिलंबा॥

मोको मातु कष्ट अति घेरो।
तुम बिन कौन हरे दुख मेरो॥

आसा तृस्ना निपट सतावै।
रिपु मूरख मोहि अति डरपावै॥

सत्रु नास कीजै महरानी।
सुमिरौं एकचित तुमहि भवानी॥

करौ कृपा हे मातु दयाला।
ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला॥

जब लगि जियौं दयाफल पाऊँ।
तुम्हरौ जस मैं सदा सुनाऊँ ॥
दुर्गा चालीसा जो कोई गावै।
सब सुख भोग परम पद पावै ॥
देवीदास सरन निज जानी।
करहु कृपा जगदंब भवानी ॥

॥ श्रीदुर्गाचालीसा सम्पूर्ण ॥

श्रीविन्ध्येश्वरी चालीसा

नमो नमो बिंध्येस्वरी, नमो नमो जगदंब।
संत जनों के काज में, करती नहीं बिलंब॥

जय जय जय बिंध्याचल रानी।
आदि सक्ति जगबिदित भवानी॥

सिंह बाहिनी जय जगमाता ।
जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता ।।

कष्ट निवारिनि जय जग देवी ।
जय जय संत असुर सुरसेवी ।।

महिमा अमित अपार तुम्हारी ।
सेष सहस मुख बरनत हारी ।।

दीनन के दुख हरत भवानी।
नहिं देख्यो तुम सम कोउ दानी॥

सब कर मनसा पुरवत माता।
महिमा अमित जगत बिख्याता॥

जो जन ध्यान तुम्हारो लावे।
सो तुरतहिं बांछित फल पावे॥

तू ही बैस्नवी तू ही रुद्रानी।
तू ही सारदा अरु ब्रह्मानी॥

रमा राधिका स्यामा काली।
तू ही मात संतन प्रतिपाली॥

उमा माधवी चंडी ज्वाला।
बेगि मोहि पर होहु दयाला॥

तुम ही हिंगलाज महरानी।
तुम ही सीतला अरु बिज्ञानी॥

तुम्ही लच्छमी जग सुख दाता।
दुर्गा दुर्ग बिनासिनि माता॥

तुम ही जाह्नवी अरु उन्नानी।
हेमावती अंबे निरबानी॥

अष्टभुजी बाराहिनि देवा।
करत बिस्नु सिव जाकर सेवा॥

चौसट्ठी देबी कल्यानी।
गौरि मंगला सब गुन खानी॥

पाटन मुंबा दंत कुमारी।
भद्रकाली सुन बिनय हमारी॥

बज्रधारिनी सोक नासिनी।
आयु रच्छिनी बिंध्यबासिनी॥

जया और बिजया बैताली।
मातु संकटी अरु बिकराली॥

नाम अनंत तुम्हार भवानी।
बरनै किमि मानुष अज्ञानी॥

जापर कृपा मातु तव होई।
तो वह करै चहै मन जोई॥

कृपा करहु मोपर महारानी।
सिध करिये अब यह मम बानी॥

जो नर धरै मातु कर ध्याना।
ताकर सदा होय कल्याना॥

बिपति ताहि सपनेहु नहि आवै।
जो देबी का जाप करावै॥

जो नर कहे रिन होय अपारा।
सो नर पाठ करे सतबारा॥

निःचय रिनमोचन होइ जाई।
जो नर पाठ करे मन लाई॥

अस्तुति जो नर पढ़ै पढ़ावै।
या जग में सो बहु सुख पावै॥

जाको ब्याधि सतावै भाई।
जाप करत सब दूर पराई॥

जो नर अति बंदी महँ होई।
बार हजार पाठ कर सोई॥

निःचय बंदी ते छुटि जाई।
सत्य बचन मम मानहु भाई॥
जापर जो कुछ संकट होई।
निःचय देबिहि सुमिरै सोई॥
जा कहँ पुत्र होय नहि भाई।
सो नर या बिधि करै उपाई॥
पाँच बरष सो पाठ करावै।

नौरातर महँ बिप्र जिमावै ॥
नि:चय होहि प्रसन्न भवानी ।
पुत्र देहि ताकहँ गुन खानी ॥
ध्वजा नारियल आन चढ़ावै ।
बिधि समेत पूजन करवावै ॥
नित प्रति पाठ करै मन लाई ।
प्रेम सहित नहि आन उपाई ॥

यह श्री बिंध्याचल चालीसा ।
रंक पढ़त होवै अवनीसा ॥
यह जनि अचरज मानहु भाई ।
कृपा दृष्टि जापर है जाई ॥
जय जय जय जग मातु भवानी ।
कृपा करहु मोहि पर जन जानी ॥

॥ श्रीविन्ध्येश्वरीचालीसा सम्पूर्ण ॥

अथ विन्ध्येश्वरीस्तोत्रम्

निशुम्भशुम्भमर्दिनीं प्रचण्डमुण्डखण्डिनीं वने रणे प्रकाशिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।
त्रिशूलमुण्डधारिणीं धराविघातहारिणीं गृहे गृहे निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥

दरिद्रदुःखहारिणीं सदा विभूतिकारिणीं वियोगशोकहारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।
लसत्सुलोललोचनं लतासदम्बरप्रदां कपालशूलधारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥

कराब्जदानदाधरां शिवाशिवां प्रदायिनीं वरावराननां शुभां भजामि विन्ध्यवासिनीम्।
ऋषीन्द्रजामिनीप्रदं त्रिधा स्वरूपधारिणीं जले थले निवासिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥

विशिष्टसृष्टिकारिणीं विशालरूपधारिणीं महोदरे विशालिनीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्।
पुरन्दरादिसेवितां मुरादिवंशखंडिनीं विशुद्धबुद्धिकारिणीं भजामि विन्ध्यवासिनीम्॥

श्रीअम्बाजीकी आरती

जय अंबे गौरी मैया जय श्यामागौरी । तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री ॥ १ ॥ जय अम्बे०
माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको । उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको ॥ २ ॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै । रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ॥ ३ ॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी । सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी ॥ ४ ॥ जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती । कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती ॥ ५ ॥ जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती । धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥ ६ ॥ जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे । मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ ७ ॥ जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी । आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ८ ॥ जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ । बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ॥ ९ ॥ जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता । भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता ॥ १० ॥ जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी । मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ ११ ॥ जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती । (श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥ १२ ॥ जय अम्बे०
(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै । कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ १३ ॥ जय अम्बे०

श्रीदेवीजीकी आरती

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!) भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय! जय!! जग०जय! जय!!

तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा । सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव-सुर-भूपा ॥ १ ॥ जग०जय! जय!!

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी । अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ॥ २ ॥ जग०जय! जय!!

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी । कर्त्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी ॥ ३ ॥ जग०जय! जय!!

तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया । मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ॥ ४ ॥ जग०जय! जय!!

राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा । तू वांछाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ॥ ५ ॥ जग०जय! जय!!

दश विद्या, नव दुर्गा, नानाशस्त्रकरा । अष्टमातृका योगिनि, नव नव रूप धरा ॥ ६ ॥ जग०जय! जय!!

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू । तूही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ॥ ७ ॥ जग०जय! जय!!

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा । विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा ॥ ८ ॥ जग०जय! जय!!

तू ही स्नेह-सुधामयि, तू अति गरलमना । रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ॥ ९ ॥ जग०जय! जय!!

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे । कालातीता काली, कमला तू वरदे ॥ १० ॥ जग०जय! जय!!

शक्ति, शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी । भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी ॥ ११ ॥ जग०जय! जय!!

हम अति दीन दुखी मा! विपत-जाल घेरे । हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ॥ १२ ॥ जग०जय! जय!!

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै । करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै ॥ १३ ॥ जग०जय! जय!!